'काव्य-हेतु' के शेषांश B.A. III Hindi Hons.

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि काव्य-हेतु के मूल में प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास ही है। संस्कृत साहित्य शास्त्र के जितने भी आचार्य हुए हैं उन सभी ने इन्हीं तीनों को काव्य-हेतु के रूप में मान्यता दी है। जब हम पाश्चात्य ~~काव्यशास्त्रियों~~ विद्वानों के सिद्धांतों का अध्ययन करते हैं तो आश्चर्यमिश्रित हर्ष होता है कि उन्होंने भी भारतीय विद्वानों के समान प्रतिभा और अभ्यास को ही काव्य का हेतु माना है। सुकरात के पूर्व पाश्चात्य जगत में यह मान्यता थी कि वाग्देवी की ~~कृपा~~ कृपा से ही काव्य रचना संभव है अर्थात् काव्य हेतु मूलतः उनकी दृष्टि में ईश्वरीय प्रेरणा या कृपा के अतिरिक्त कुछ नहीं था। सुकरात ने इस पर अपना मन्तव्य दिया है कि "कवि कविता इस कारण नहीं लिखते कि वे बुद्धिमान हैं वरन इस कारण कि उनमें एक विशिष्ट प्रकृति या प्रतिभा है जो उत्साह प्रदान करने वाली होती है"। प्लेटो काव्य सर्जन को विक्षिप्तावस्था का परिणाम मानते हैं। उनकी दृष्टि में काव्य का जन्म मानसिक विक्षेप के कारण होता है। उनके शिष्य अरस्तु ने काव्यसृजन के दो हेतु स्वीकार किया है - अनुकरण और लय। वे कहते हैं- "सामान्यतः कविता दो कारणों से प्रस्फुटित ~~हुई~~ हुई प्रतीत होती है पहला है अनुकरण जो हमारे स्वभाव की सहज वृत्ति है और दूसरी वृत्ति हमारे सामंजस्य और लय की है, जो छन्द का ही एक अनुभाग है।" अरस्तु काव्यहेतु में निपुणता

का भी महत्व स्वीकारते हैं। इस प्रसंग में डॉ० नगेन्द्र ने लिखा है कि "होरेस और उनके अनुयायी नव्यशास्त्रवादियों को छोड़कर अन्य सभी काव्य चिन्तकों ने प्रतिभा को ही प्राथमिकता दी है। वास्तव में होरेस और पोप जैसे चिन्तक भी प्रतिभा को गौण स्थान देने का साहस नहीं कर सके थे किन्तु उनके विवेचन की मूल व्यंजना निपुणता और अभ्यास के ही पक्ष में थी।"

उपर्युक्त पाश्चात्य आचार्यों के काव्य सिद्धान्त पूर्णतः अगर नहीं भी माने तो भी बहुत कुछ भारतीय आचार्यों के सिद्धान्तों से मिलते-जुलते हैं। इनके अतिरिक्त पश्चिम के कुछ ऐसे भी विद्वान हैं जिन्होंने इस बिन्दु पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया है जिनमें फ्रायड, युंग, एडलर और रसेल हैं।

फ्रायड का चिन्तन पूर्ववर्ती समस्त आचार्यों से भिन्न तथा अलग है। वे समस्त क्रियाओं की उत्पत्ति का मूल कारण काम को स्वीकार करते हैं। इनकी मान्यता है कि समस्त काम-वासनाओं की न तो अभिव्यक्ति की जा सकती है और न उनकी पूर्ति की जा सकती है। ऐसे में वे दमित वासनाएं किसी न किसी प्रकार से व्यक्त होने का आधार खोजती रहती हैं। काव्य भी एक ऐसा ही आधार है। दमित वासनाएं या अतृप्त कामनाएं ही मनुष्य को काव्य सृष्टि की ओर प्रेरित करती हैं। अर्थात फ्रायड दमित वासनाओं को काव्य सृजन का प्रधान कारण स्वीकार करते हैं। इस सिद्धान्त को अब तक सिरे से नकारा न जा सका है क्योंकि इसमें आंशिक सत्यता का अनुभव किया गया है।